• पूजा...

विष्णु जी कर देंगे मालामाल!

हिंदू धर्म में गुरुवार का दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु को समर्पित माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने और व्रत करने से सुख-समृद्धि का आगमन होता है। धार्मिक मान्यताओं में पीली चीजों का संबंध श्रीहरि विष्णु से माना जाता है। ऐसे में अगर आप गुरुवार के दिन हल्दी वाले जल से जुड़े कुछ उपाय करते हैं, तो आपको कई समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है और धन लाभ भी हो सकता है। ऐसे में चलिए जानते हैं कि गुरुवार के दिन भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए हल्दी वाले जल से क्या उपाय करने चाहिए।

▶ गुरुवार को सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ कपड़े पहन लें। इस दिन पीले रंग के कपड़े पहनना बहुत शुभ माना जाता है। इसके बाद भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा करें। अब एक गिलास में साफ पानी लेकर उसमें थोड़ी हल्दी मिलाएं। अब इस पानी को अपने घर

के मुख्य द्वार पर छिड़कें। हल्दी वाले जल का यह उपाय करने से घर में सुख-समृद्धि आने लगती है।

▶ **गुरु ग्रह होगा मजबूत**

अगर आप अपने करियर या कारोबार में परेशानियों का सामना कर रहे हैं या आपकी कुंडली में गुरु ग्रह कमजोर स्थिति है, तो इसके लिए गुरुवार के दिन सुबह स्नान करने वाले जल में थोड़ी सी हल्दी मिला लें। फिर इस जल से नहाएं। धार्मिक मान्यता है कि हल्दी वाले पानी से नहाने से जीवन से नकारात्मक ऊर्जा दूर होने लगती है और कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति मजबूत होती है।

▶ **पैसों की तंगी दूर**

गुरुवार के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करने के बाद भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करनी चाहिए। फिर एक लोटा जल में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर तुलसी के पौधे पर जरूर अर्पित करें। कहते हैं कि तुलसी में माता लक्ष्मी का वास माना जाता है। ऐसे में अगर आप गुरुवार के दिन इस उपाय को करते हैं, तो इससे भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी मिलती है, जिससे पैसों की तंगी नहीं रहती है।

▶ **सफलता की प्राप्ति**

भगवान विष्णु की पूजा करने के साथ ही, गुरुवार के दिन केले के पेड़ की पूजा करने का भी खास महत्व होता है। ऐसे में गुरुवार के दिन सुबह स्नान करने के बाद केले के पेड़ पर हल्दी का जल जरूर चढ़ाना चाहिए। धार्मिक मान्यता है कि ऐसा करने से भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की कृपा प्राप्त होती है।

• मथुरा...

कृष्ण कुब्जा मंदिर

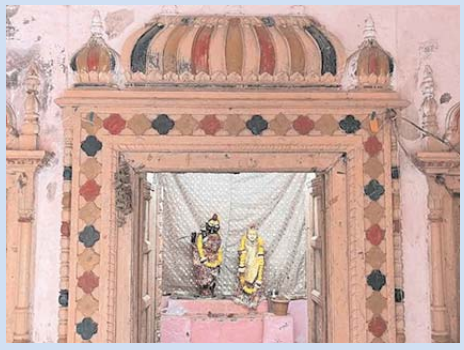

मथुरा भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि है और यहां अनगिनत श्री कृष्ण मंदिर हैं। हर वर्ष देश-विदेश से लाखों भक्त भगवान कृष्ण इस जन्मभूमि के दर्शन करने पहुंचते हैं। भारत में कई चमत्कारी मंदिर हैं, जहां भगवान के दर्शन से भक्तों को अपनी समस्याओं से छुटकारा प्राप्त होता है। मथुरा में अधिकतर मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण राधारानी के साथ विराजमान हैं, लेकिन परिक्रमा मार्ग पर स्थित एक चमत्कारी मंदिर में प्रभु कुब्जा के साथ विराजमान हैं। इस मंदिर के बारे में माना जाता है कि यहां प्रभु के दर्शन करने से हर तरह की स्किन संबंधी बीमारी से राहत मिल जाती है। कृष्ण कुब्जा मंदिर मथुरा का एक ऐसा चमत्कारी मंदिर है, जिसके रहस्य के बारे में जानकर आप भी हैरान हो जाएंगे। कृष्ण कुब्जा मंदिर 500 वर्ष पुराना है। यहां जाने से किसी भी तरह की त्वचा से संबंधित समस्या दूर हो जाती है।

कृष्ण कुब्जा मंदिर दुनिया का एकमात्र ऐसा मंदिर जहां कृष्ण भगवान राधा जी के साथ नहीं, बल्कि कुब्जा के साथ विराजमान है। मथुरा के इस मंदिर में रोजाना बड़ी संख्या में भक्त भगवान के दर्शन के लिए आते हैं। जानते हैं इस रहस्यमय मंदिर के बारे में।

▶▶ मंदिर की पौराणिक कथा क्या है?

पुराणों के मुताबिक, कुब्जा मथुरा के राजा कंस की नौकरानी थी। कुब्जा दिखने में बूढ़ी और बदसूरत होने के साथ शारीरिक रूप से कुरूप भी थी। इसलिए मथुरा में हर कोई कुब्जा की शारीरिक बनावट का मजाक उड़ाता था।

एक बार जब श्री कृष्ण मथुरा पहुंचे थे, तब कुब्जा कंस के लिए चंदन लेप रही थी। मथुरावासी से उलट श्रीकृष्ण ने उनका मजाक ना बनाकर कुब्जा को सुंदरी-सुंदरी कहकर छेड़ने लगे। कुब्जा को लगा श्रीकृष्ण उनका मजाक उड़ा रहे हैं तो वो रोने लगी।

तभी कृष्ण जी ने अपना एक पैर कुब्जा के पैर पर रखा और उसकी ठुड्डी पकड़कर उसे ऊपर उठा दिया। जिसके बाद कुबड़ी कुब्जा एक सुंदर महिला में बदल गई। श्रीकृष्ण की ये लीला देखकर सभी मथुरावासी हैरान हो गए।

▶▶ त्वचा से संबंधित समस्या होती है दूर

श्रीकृष्ण की इसी लीला के बाद कहा जाता है कि, जो भी भक्त कृष्ण कुब्जा मंदिर में जाता है, उसके सभी तरह के त्वचा संबंधी विकार दूर हो जाते हैं। प्रमुख मीडिया रिपोर्ट में इस मंदिर को स्किन संबंधी समस्याओं को दूर करने वाला बताया गया है

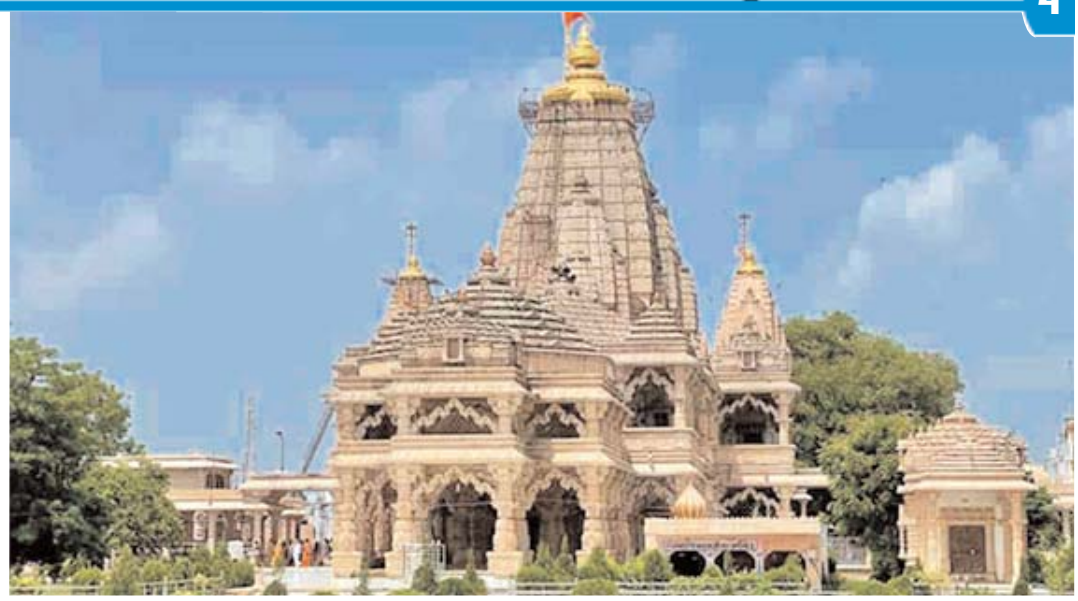

भारत का रहस्यमयी मंदिर 'सेठों के सेठ'

सांवलिया सेठ मंदिर, जिसे श्री सांवलियाजी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर की कहानी भोलाराम गुर्जर नाम के एक ग्वाले से जुड़ी है, जिसे सपने में तीन दिव्य मूर्तियों को देखा था।

जिसके बाद इन मूर्तियों को बाद में बागुंड गांव के छापर में खोजा गया, और फिर मिलने पर इन्हें मंडफिया, भादसोड़ा और छापर में स्थापित किया गया। मंडफिया में स्थापित मंदिर ही सांवलिया धाम के रूप में प्रसिद्ध है...

सवारियां सेठ मंदिर, जो कि चित्तौड़गढ़ जिले में एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है, भगवान कृष्ण के स्वरूप सांवलिया जी को समर्पित है। यह मंदिर अपनी अद्भुत मूर्तिकला, शांतिपूर्ण वातावरण और भक्तों की अटूट आस्था के लिए जाना जाता है। हालांकि, इसकी वास्तविक पहचान और प्रसिद्धि 'सेठों के सेठ' के रूप में है, जो इसे अन्य मंदिरों से अलग करती है। यह नाम न केवल मंदिर की प्रसिद्धि को दर्शाता है, बल्कि इसके पीछे एक दिलचस्प इतिहास और कुछ कहानियां भी जुड़ी हैं। आइए जानते हैं आखिर क्यों मिला इस मंदिर को यह अनूठा नाम और क्या है इसकी महिमा।

● रहस्यमयी उत्पत्ति, भूमि से निकल आया दिव्य स्वरूप

सांवलिया सेठ मंदिर, जिसे श्री सांवलियाजी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर की कहानी भोलाराम गुर्जर नाम के एक ग्वाले से जुड़ी है, जिसे सपने में तीन दिव्य मूर्तियों को देखा था। जिसके बाद इन मूर्तियों को बाद में बागुंड गांव के छापर में खोजा गया, और फिर मिलने पर इन्हें मंडफिया, भादसोड़ा और छापर में स्थापित किया गया। मंडफिया में स्थापित मंदिर ही सांवलिया धाम के रूप में प्रसिद्ध है। लोककथाओं में श्री सांवलिया सेठ को मीराबाई के गिरिधर गोपाल रूप से सम्बन्धित माना जाता है। कहा जाता है कि जब संत दयाराम ने मूर्तियों को छुपाया था, तब मीराबाई भजन-कीर्तन हेतु इन्हीं मूर्तियों को लेकर भ्रमण करती थीं।

● सेठों के सेठ नाम के पीछे की कहानी

उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों में, विशेषकर व्यापारियों और व्यवसायियों के बीच सांवलिया सेठ की गहरी आस्था है। ऐसा माना जाता है कि जो कोई भी अपने व्यापार या किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत से पहले सांवलिया सेठ के दर्शन करता है और उनसे प्रार्थना करता है, उसे निश्चित रूप से सफलता और समृद्धि मिलती है। सदियों से चली आ रही इस मान्यता ने मंदिर को 'सेठों के सेठ' यानी उन सभी सेठों (व्यापारियों) के भी सेठ के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है, जो धन और व्यापार के देवता हैं।

● धन और वैभव का दाता

लोककथाओं के अनुसार, सांवलिया सेठ स्वयं धन और वैभव के दाता हैं। ऐसी मान्यता है कि मंदिर में चढ़ाए गए दान और भक्तों की शुद्ध भावना से किए गए कार्यों में कभी कमी नहीं आती। कई भक्तों का मानना है कि सांवलिया सेठ ने उन्हें अप्रत्याशित रूप से धन लाभ कराया है या उनके व्यापार को असाधारण ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। यही कारण है कि उन्हें 'सेठों का सेठ' कहा जाता है, क्योंकि वह स्वयं सभी सेठों से ऊपर हैं और उन्हें धन प्रदान करने वाले हैं।

● न्याय और ईमानदारी का प्रतीक

कुछ कथाएं यह भी बताती हैं कि सांवलिया सेठ उन लोगों का पक्ष लेते हैं जो ईमानदारी और न्याय के साथ व्यापार करते हैं। वे ऐसे व्यापारियों की रक्षा करते हैं और उन्हें समृद्ध करते हैं। इसलिए, उन्हें एक ऐसे 'सेठ' के रूप में देखा जाता है जो न केवल धन देते हैं, बल्कि सही मार्ग पर चलने वाले व्यापारियों का मार्गदर्शन भी करते हैं।

● सांवलिया जी का चमत्कारिक प्रभाव

मंदिर से जुड़े कई ऐसे चमत्कार भी प्रचलित हैं, जहां भक्तों ने अपनी आर्थिक समस्याओं से मुक्ति पाई है या उनके रुके हुए व्यापार को गति मिली है। इन चमत्कारों ने सांवलिया सेठ की 'सेठों के सेठ' वाली छवि को भक्तों के बीच और मजबूत किया और उनकी इस मंदिर को लेकर आस्था बढ़ती गई।

● मंदिर का महत्व और प्रभाव

सवारियां सेठ मंदिर आज भी हजारों भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण आस्था का केंद्र है। विशेषकर पूर्णिमा, एकादशी और अन्य त्योहारों पर यहां भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। लोग अपने व्यापार में सफलता, परिवार की सुख-शांति और धन-धान्य की वृद्धि के लिए यहां प्रार्थना करने आते हैं। मंदिर का वातावरण बहुत ही शांत और आध्यात्मिक है, जो भक्तों को एक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। यह मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि राजस्थान के पर्यटन में भी इसका अहम योगदान है। देश-विदेश से पर्यटक और श्रद्धालु इस रहस्यमयी मंदिर के दर्शन करने और इसकी अनूठी कहानी को जानने के लिए यहां आते हैं।

■ पं. नित्यानंद

• भोजन के...

कुछ नियम

हिंदू धर्म में भोजन करने के कुछ नियम बताए गए हैं इन नियमों के बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं। आज हम आपको भोजन करने से जुड़े कुछ ऐसे नियम बताएंगे, जिनके बारे में जानना बेहद जरूरी है। भोजन करने से पहले एक बार जल का आचमन करना चाहिए। आचमन करते हुए मन में अमृतोपस्तपरणमसि बोलें। इसका मतलब होता है कि, अमृत रूप जल! भोजन और आश्रय के लिए धन्यवाद। आचमन करने के बाद जिस भी भगवान को आप मानते हैं, उनका ध्यान करके भोजन को धीरे-धीरे चबाकर खाएं। अंत में भोजन के बाद एक बार पानी पिए और बोले अमृतापिधानमसि जिसका अर्थ अमृत, तु भोजन का आवरण है। इस तरह खाने से मन और मस्तिष्क दोनों शांत होते हैं। खाना खाते वक्त कभी भी दूसरी चीजें न करें, फोन और टेलीविजन से भी दूर रहें। खाना कभी भी बिस्तर पर बैठकर ना खाएं। धार्मिक शास्त्र के अनुसार ऐसा करना सही नहीं माना जाता है।

• पीपल...

पीपल के पेड़ की पूजा करने से सभी तरह के पाप और दुखों का नाश होता है। जो लोग नियमित रूप से पीपल के पेड़ की पूजा करने के साथ जल चढ़ाते हैं उनकी सभी तरह की मनोकामना पूर्ण होती है। वही पीपल के पेड़ की परिक्रमा करने से व्यक्ति की आयु भी लंबी होती है। जो लोग पीपल के पेड़ की देखभाल या संरक्षण करते हैं, उन्हें कभी भी धन की कमी नहीं होती है। इसके साथ ही पीपल के पेड़ की सेवा करने से कर्ज से भी छुटकारा मिलता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित